ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.2, April – June,2024/8

# बहुभाषी शिक्षा की अनिवार्यता और मातृभाषा आधारित शिक्षा

**डॉ0 सोनू सारण, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,**
**श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाल विश्वविद्यालय, झुनझुनू राजस्थान।**
**https://doi.org/10.61410/had.v19i2.182**

## सारांश

भारत की भाषाई विविधता इसकी समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री का प्रमाण है, फिरभी इस विविधता को इसके शैक्षिक ढांचे में पूरी तरह से एकीकृत नहीं किया गया है। विशेषकर शहरी केंद्रों में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा का प्रचलन, मातृ भाषा आधारित शिक्षा के संभावित लाभों को कम कर देता है। यह शोध पत्र भाषाई विविधता को सुरक्षित रखने, अधिगम को बढ़ावा देने तथा स्कूलों में समावेशिता को बढ़ावा देने के साधन के रूप में बहुभाषी शिक्षा और मातृ भाषा–आधारित शिक्षा की अनिवार्यता पर प्रकाश डालता है।

## परिचय –

भारत की भाषाई विविधत इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक जटिलता का प्रतीक है। भारत, भाषाओं और बोलियों के बहुरूप दर्शक के साथ, भाषाई रूप से विविध राष्ट्र के रूपमें खड़ा है। भारतीय संविधान आधिकारिक तौर पर 22 भाषाओं को मान्यता देता है, किन्तु सम्पूर्ण भारत में 1600 से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है । यह भाषाई विविधता भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का प्रमाण है। हालाँकि, यह शिक्षा के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ भी पेश करता है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी और हिंदी का प्रचलन जो की भारत की भाषाई विविधता वाली विशेषता के विपरीत है। कुछ समय से भारत में अंग्रेजी और पश्चिमी शिक्षा का बोल बाला बढ़ रहा है। जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपनी मूल भाषाओं का त्याग कर अन्य भाषाओ में सीखने की अधिक योग्यता प्रदर्शित कर रहा है।

## भारत में भाषा शिक्षा की वर्तमान स्थिति

भारत देश में भाषाई विविधता, अंग्रेजी और हिंदी का प्रभुत्व, मूल भाषाओं की गिरावट, भाषाई बाधाएं, क्षेत्रीय विविधताएं और कई अन्य विचार शामिल हैं।जबकि अंग्रेजी और हिंदी भारत के शैक्षिक परिदृश्य में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। वर्तमान भारत में अंग्रेजी भाषा जिसे अक्सर रोजगार और वैश्विक संचार की कुंजी के रूप में देखा जा रहा है शहरी और विशिष्ट शैक्षणिक संस्थानों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुकी है। भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा और आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी जो आज भी कई राज्यों में पाठ्य क्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हालाँकि, इसे उन क्षेत्रों में लागू करने से जहां यह मातृ भाषा नहीं है, बहस और तनाव पैदा हो गया है।

भाषाई विविधता भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है किन्तु फिर भी आज विशेष रूप से शहरी तथा शिक्षित वर्गों के बीच हमारी कई मूल भाषायें अवनति की ओर जा रही है, हालाँकि बोली जाने वाली भाषाओं की वास्तविक संख्या कहीं अधिक व्यापक है। संस्थागत समर्थन, शैक्षिक सामग्री और युवावक्ताओं की कमी के कारण कई भाषाएँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। भाषा हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा है। जिन छात्रों की मातृ भाषा भाषा अंग्रेजी या हिंदी नहीं है, वे अक्सर शिक्षा के माध्यम को चुनते समय बड़ी समस्या से जूझते हैं, जिसके कारण उनके शैक्षिक परिणाम भी प्रभावित होते हैं। इस भाषाई बाधा के कारण शैक्षिक असमानताओं को बढ़ावा मिलता है तथा सामाजिक गतिशीलता भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होती

है। अंग्रेजी और हिंदी भाषा का प्रभुत्व विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग है, जिसके कारण भाषा सम्बन्धी शिक्षा नीति या प्रभावित होती है। भारत में प्रत्येक राज्य की अपनी एक भाषा नीति होती है, जो क्षेत्रीय भाषाई विविधता और ऐतिहासिक संदर्भ को प्रदर्शित करती है। कुछ राज्य अपनी स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने पर बल देते हैं, जबकि कुछ राज्य अंग्रेजी या हिंदी को प्राथमिकता देते हैं। कई भारतीय भाषाएँ, जैसे कि संस्कृत, तमिल और कन्नड़, शास्त्रीय स्थिति का आनंद लेती हैं तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में सहायक होती हैं। यदि हम भाषा शिक्षा के अन्य पक्षों की ओर देखते है तो हमें पता चलता है की इनमे सीमित संसाधन, शिक्षक की कमी, मान की कृत सामग्री की आवश्यकता, द्विभाषी शिक्षा की जटिलताएँ और भाषा सीखने में डिजिटल संसाधनों की भूमिका शामिल हैं।

## बहुभाषीशिक्षा के लाभ

बहुभाषी शिक्षा व्यापक शोध औ रवास्तविक दुनिया के अनुभवों से प्रमाणित कई महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से बहुभाषा वाद समस्या–समाधान, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, स्मृति प्रतिधारण और सूचना स्मरण सहित संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाता है। बहुभाषी व्यक्ति भाषा संरचनाओं की गहन समझ प्रदर्शित करते हैं अतिरिक्त भाषाओं के अधिग्रहण की सुविधा प्रदान करते हैं और बहुभाषी शिक्षा के संज्ञानात्मक लाभों को प्रमाणित करते हैं।

बहुभाषी छात्र अपनी विस्तारित शब्दा वली, उन्नत भाषा कौशल और बेहतर पढ़ने की समझ के कारण विभिन्न विषयों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। विभिन्न शोधो से पता चलता है कि बहुभाषी छात्र गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों में अपनी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करते हैं। यह लाभ भविष्य में कैरियर की संभावनाओं और वैश्विक रोजगार क्षमता को बढ़ाता है। बहुभाषावाद विश्व में ढेर सारे करियर के अवसर प्रदान करता है। कई भाषाओं में प्रवीणता वैश्विक संचार को बढ़ाती है विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी की संभावनाओं को व्यापक बनाती है और व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रो पर नेविगेट करने के लिए सक्षम बनाती है।

सांस्कृतिक रूप से यदि हम देखे तो बहुभाषी शिक्षा द्वारा गहन सांस्कृतिक समझ, सहिष्णुता, सहानुभूति और विविधता के प्रतिसम्मान को बढ़ावा मिलता है। यह वैश्विक नागरिकता का पोषण करता है यात्रा के अनुभवों तथा विविध संस्कृतियों के साथ व्यापक संबंधो को बढ़ता है बहुभाषा वाद द्वारा स्वदेशी और अल्प संख्यक भाषाओं को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो सांस्कृतिक विरासत की रक्षा में सहायक होती है। बहुभाषी शिक्षा विविध भाषाई पृष्ठ भूमि के छात्रों को समायोजित करके, भेद भावको कम करके और बहुसांस्कृतिक समाज में सामाजिक एक जुटता को बढ़ावा देकर समावेशिता को बढ़ावा देती है।

## मातृ–भाषा आधारित शिक्षा के प्रसार में चुनौतियाँ

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था, जहाँ अंग्रेजी और हिंदी भाषा का प्रभुत्व है में मातृभाषा–आधारित शिक्षा को प्रारंभ करना आसान नहीं है, इसके लिए शिक्षा के समक्ष कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। ये चुनौतियाँ बहुआयामी हैं जो देश की भाषाई विविधता और क्षेत्रीय बारीकियों से जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं जैसे –

1. **संसाधनों की कमी–** कई स्थानीय भाषाओं में पाठ्यक्रम सामग्री, पाठ्य पुस्तकें और शिक्षण सहायक सामग्री विकसित करने के लिए पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए भाषा विज्ञान, अनुवाद और सामग्री निर्माण में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

2. **शिक्षक प्रशिक्षण –** शिक्षका को मातृभाषा तथा बहुभाषा दोनों में प्रशिक्षित करने हेतु भाषा दक्षता संबंधी पाठ्यक्रम और शैक्षणिक प्रशिक्षण सहित पर्याप्त समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है। जिससे वे छात्रों को भी उचित रूप से प्रशिक्षित कर सके।

3. **भाषा मानकीकरण–**भारत में भाषाई विविधता के अंतर्गत अनेक बोलिया तथा भाषायें शामिल है जिसके कारण शैक्षिक सामग्रियों के मानकीकरण सम्बन्धी समस्या का सामना करना पड़ता है।

4. **शिक्षकों की कमी** मातृभाषा और अन्य भाषाओं में कुशल शिक्षकों की पहचान करना और उन्हें नियुक्त करना चुनौती पूर्ण हो सकता है। खासकर उन क्षेत्रों में जहां योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षकों को मातृभाषाओं में शिक्षा देने के लिए प्रेरित करना जो हमेशा उनकी पहली भाषा नहीं हो सकती एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश कर सकती है।

5. **सामुदायिक स्वीकृति –** वर्तमान बाहुल्य शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा से मातृभाषा–आधारित शिक्षा में बदलाव के लिए माता–पिता के प्रतिरोध पर काबू पाना आवश्यक है। शिक्षा प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों को शामिल करना विशेष रूप से भाषा निर्देश परिवर्तन के प्रति संदेह या प्रतिरोध की स्थिति में एक कठिन कार्य हो सकता है।

6. **संक्रमण योजना** – अंग्रेजी माध्यम से मातृभाषा माध्यम लागू करना शिक्षा में एक बहुत बड़ा परिवर्तन है। जिसे लागू करने के लिए यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि कही छात्र अन्य विषयों में पिछड़ न जाएं। इसके लिए सावधानी पूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता है।

7. **भाषापदानु क्रम–** भाषाई पदानु क्रम को समाप्त करने तथा अल्प संख्यक भाषाओं के हाशिए पर जाने से रोकने हेतु प्रयास करना आवश्यक है। इस दिशा में कार्य करने के लिए उचित दिशा निर्देशों को प्रेषित किया जाना चाहिए जिससे भाषाई विविधता और सांस्कृतिक संतुलन को संरक्षित किया जा सके।

8. **आकलन और मूल्यांकन** – मातृभाषा–आधारित शिक्षा के लिए उचित मूल्यांकन उपकरण और तकनीको को विकसित करना चुनौती पूर्ण कार्य है। खासकर जहां सभी भाषाओं के लिए मान की कृत परीक्षण मौजूद नहीं हैं।

9. **नीति और कार्यान्वयन**– राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर प्रभावी नीति निर्माण और कार्यान्वयन के लिए राजनीतिक इच्छा शक्ति और भाषाई विविधता के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। नौकर शाही बाधाओं पर काबू पाना और नीति का क्रियान्वयन योग्य कार्यक्रमों में अनुवाद सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

10. **अंग्रेजी दक्षता संतुलन–** अंग्रेजी भाषा आधारित शिक्षा और मातृभाषा आधारित शिक्षा की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में जहां अंग्रेजी दक्षता रोजगार के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। एक जटिल चुनौती पेश करती है।

11. **तकनीकी चुनौतियाँ –** कई भाषाओं में डिजिटल शैक्षिक संसाधनों का विकास करना और दूर दराज के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की पहुंच सुनिश्चित करना तार्किक चुनौतियां खड़ी करता है। कोविड–19 महामारी ने डिजिटल बुनियादी ढांचे और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के महत्व पर प्रकाश डाला जो सभी भाषाओं में आसानी से उपलब्ध नहीं हो सकते हैं।

## भाषा शिक्षा चुनौतियों के समाधान के उपाय

भारत में मातृभाषा–आधारित शिक्षा की ओर बदलाव से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई उपाय आवश्यक हैं

1. **संसाधनों का आवंटन**– भारतीय सरकार को कई स्थानीय भाषाओं में मानकीकृत पाठ्यक्रम सम्बन्धी पाठ्य पुस्तक तथा उनसे सम्बन्धी शिक्षण सहायक सामग्रीयों को उपलब्ध करने हेतु प्रयास करने

चाहिए। इन सामग्रीयों को निर्धारित करते समय भी यह ध्यान रखना चाहिए की ये समस्त स्कूलों और छात्रों के लिए आसानी से उपलब्ध हो सके।

2. **शिक्षक प्रशिक्षण –** शिक्षकों को मातृभाषा और बहुभाषा दोनों में दक्षता प्राप्त हो इसके लिए भी व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए जाने चाहिए ताकि विभिन्न भाषाई वातावरण में प्रभावी तरीके से पढ़ाने की उनकी क्षमता बढ़ सके।

3. **भाषा मानकीकरण** – बहुभाषी तथा मातृभाषा से सम्बन्धी शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न बोलियों तथा विविधताओं सहित भाषाओं को मानकीकृत करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऐसे मामलों में जहां मानकीकृत लेखन प्रणालियों की कमी है। वहां पहले भाषाओं के मानकीकरण की आबश्यकता है अतः पहले इसे विकसित करने हेतु प्रयास करना चाहिए।

4. **सामुदायिक व्यस्तता** – मातृभाषा तथा बहुभाषी शिक्षा में माता–पिता और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। जिसके लिए जागरूकता अभियान और स्कूलों में भागीदारी मातृभाषा–आधारित शिक्षा को सफल बनाने हेतु आवश्यक है। इनके समर्थन को बढ़ाने में हित धारकों के बीच स्वामित्व और प्रतिबद्धता की भावना में मदद कर सकती है।

5. **संक्रमण योजना** – अंग्रेजी से मातृभाषा में निर्बाध परिवर्तन की योजना बनाना आवश्यक है। पाठ्यक्रम संरेखण और ब्रिजिंग कार्यक्रमों का विकास यह सुनिश्चित करने की रणनीति का हिस्सा होना चाहिए कि संक्रमण के दौरान छात्र अन्य विषयों में पीछे न रहें।

6. **भाषा पदानुक्रम हटाए –** सरकारों को भाषाई विविधता और सांस्कृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए भाषा पदानुक्रम और अल्प संख्यक भाषाओं के हाशिए पर जाने को खत्म करने के लिए काम करना चाहिए।

7. **आंकलन और मूल्यांकन –** उपयुक्त मूल्यांकन उपकरण विकसित करना और छात्र प्रगति की लगातार निगरानी करना महत्वपूर्ण है। ये उपाय शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में मदद करते हैं और यह निश्चित करते हैं कि छात्र वांछित सीखने के परिणाम प्राप्त कर रहे हैं।

8. **नीति और कार्यान्वयन** – सरकारों को मातृभाषा आधारित शिक्षा को प्राथमिकता देने वाली भाषा शिक्षा नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन के लिए मजबूत समर्थन प्रदान करना चाहिए। नीतियों को प्रभावी कार्यक्रमों में बदलने के लिए नौकरशाही बाधाओं पर काबूपाना महत्वपूर्ण है।

9. **संतुलित अंग्रेजी दक्षता**– अंग्रेजी दक्षता और मातृभाषा आधारित शिक्षा के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है खास कर शहरी क्षेत्रों में जहां अंग्रेजी कौशल को रोजगार और कैरियर के अवसरों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

10 **तकनीकी एकीकरण** – कई भाषाओं में डिजिटल शैक्षिक संसाधनों का विकास करना और दूरदराज के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की पहुंच सुनिश्चित करना डिजिटल विभाजन को पाटने और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने के लिए आवश्यक कदम हैं।

## निष्कर्ष

भारत में बहुमुखी भाषा शिक्षा की स्थिति एक ऐसा परिदृश्य है जो अवसरों और चुनौतियों दोनों से चिह्नित है। भारत की भाषाई विविधता पूरे देश में बोली जाने वाली 1600 से अधिक भाषाओं के साथ इसकी समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री का प्रमाण है। हालाँकि इस विविधता को शैक्षिक ढांचे में पूरी तरह से एकीकृत नहीं किया गया है जिसके कारण कई शैक्षणिक संस्थानों में अंग्रेजी और हिंदी का प्रभुत्व है। विशेषकर शहरी और शिक्षित आबादी क्षेत्रो में मातृ भाषाओं का क्षरण एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। भाषा जो अधिगम के लिए एक पुल का कार्य करती है किन्तु कई बार हाशिए पर रहने वाले लोगो के

लिए ये एक बाधा बन जाती है। जिसके कारण शैक्षिक असमानताएं बढ़ती हैं। शिक्षा नीतियों में भाषा की स्थिति को क्षेत्रीय विविधताएं, संसाधन की कमी, शिक्षकों की कमी और डिजिटल विभाजन जैसी समस्याए इसे और अधिक जटिल बनाते हैं।

फिर भी मातृभाषा आधारित शिक्षा के महत्व की मान्यता बढ़ रही है। खासकर स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों में। कई भारतीय राज्यों ने सीखने के परिणामों में सुधार लाने और भाषाई विविधता को संरक्षित करने के उद्देश्य से प्राथमिक शिक्षा में मातृ भाषा शिक्षा शुरू करने के लिए कार्यक्रम शुरू किए हैं।बहुभाषी शिक्षा कई लाभ प्रदान करती है जिसमें उन्नत संज्ञानात्मक कौशल, शैक्षणिक उत्कृष्टता, वैश्विक अवसर, सांस्कृतिक समझ और समावेशिता शामिल है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुए केस अध्ययन बहुभाषी शिक्षा की जटिलताओं और लाभों में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। ये अध्ययन क्षेत्रीय और सांस्कृतिक बारीकियों पर विचार करने वाली अनुकूल भाषा की शिक्षा रणनीतियों की आवश्यकता पर बल देती हैं। हालाँकि बहुभाषा संबधी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं जिन्हें सावधानी पूर्वक योजना, सामुदायिक सहभागिता, सरकारी समर्थन और भाषाई विविधता के संरक्षण की प्रतिबद्धता के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है।

जैसे–जैसे भारत द्वारा अपनी शिक्षा प्रणाली को विकसित और अनुकूलित करने का प्रयास किया जा रहा है, वैसे ही उसे अंग्रेजी भाषा की दक्षता के लाभ और मातृभाषा के संरक्षण के बीच संतुलन बनाना होगा। भाषा शिक्षा नीतियां अकादमिक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक पहचान दोनों को बढ़ावा देने वाली न्याय संगत, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होनी चाहिए। भारत की भाषाई विविधता एक चुनौती नहीं है, बल्कि इसे संजोकर रखना एक खजाना है और इसकी शिक्षा प्रणाली को इस समृद्धि को प्रतिबिंबित करना चाहिए। ऐसा करके, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसके सभी छात्रों को उनकी भाषाई पृष्ठ भूमि की परवाह किए बिना एक परस्पर और विविध दुनिया में पनपने का अवसर मिले।

## संदर्भ सूची –


1. पट्टनायक, डी0पी0 (एड.) (2008) भाषा, शिक्षा और संस्कृति ; भारत पर विचार। ऋषि प्रकाशन।
2. मोहंती, ए0के0, और पांडाएम. (सं0) (2008) सामाजिक न्याय के लिए बहुभाषी शिक्षाः स्थानीय का वैश्वीकरण, ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. यूनस्को, (2003) बहुभाषी दुनिया में शिक्षा, यूनेस्को शिक्षा स्थिति।
4. एन0ई0पी0 (2020) नेशनल एहुकेश्ज्ञन पॉलिसी न्यू दिल्ली, एम0एच0आर0डी0।
5. वर्मा, डी.के. (2011), भारतीय शिक्षा प्रणाली के उत्थान और पतनः एक अध्ययन नई दिल्ली : शिक्षा प्रकाशन।
6. भारत सरकार। (2019) राष्ट्रीय शिक्षा नीति मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
7. भारत का संविधान, (1950) भारत सरकार।